ओम् कथा
(AUM KATHA)

रचयिता

डा0 नागेन्द्र प्रसाद दूबे,

अध्यक्ष,

ओम् फाउंडेशन, न्यूयार्क, यू. एस. ए.

प्रथम संस्करण – 2023

संसोधित संस्करण – 2025

WORLD ASSOCIATION OF INTEGRATED MEDICINE

(An Organisation for Global Establishment of Integrated Medicine)

AUM FOUNDATION

ओम् फाउंडेशन

न्यूयार्क, यू. एस. ए.

N-10/60, C-1, Kakarmatta, PO - Bazardeeha, Varanasi,

UP – 221106, India Email: integratedmedicine@yahoo.com

Price: Rs.60/-

ओम् कथा

(AUM KATHA)

रचयिता

डा0 नागेन्द्र प्रसाद दूबे, अध्यक्ष

ओम् फाउंडेशन, न्यूयार्क, यू. एस. ए.

सौजन्य द्वारा:

विश्व समन्वित चिकित्सा संघ

प्रथम संस्करण – 2023

संसोधित संस्करण – 2025

All Rights Reserved: World Association of Integrated Medicine.

(No part of this publication can be reproduced, stored in system or transmitted in any form or by any way or means without the prior permission of the author).

ISBN	**:**	**978-93-5916-881-4**
Typing Support	:	Avaneesh Kumar Patel
Published by	:	**World Association of Integrated Medicine** N-10/60, C-1, Kakarmatta, PO – Bazardeeha, Varanasi, UP-221106, INDIA **Email:** integratedmedicine@yahoo.com **Website:** integratedmedicineindia.org

First Edition - 2023

Revised Edition - 2025

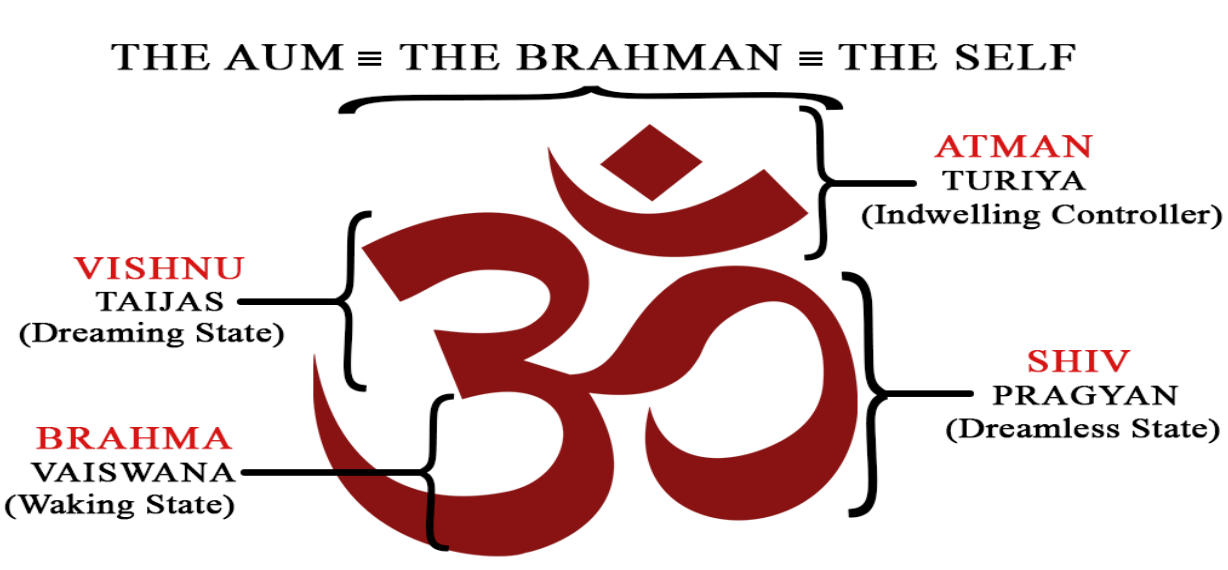

"DIVINE REPRESENTATION OF AUM"

"प्रस्तावना"

परमपिता परमेश्वर सम्पूर्ण ब्रह्म के स्वामी हैं यानि परमात्मा सर्व व्यापी है यानि परमात्मा में सम्पूर्ण व्याप्त है। प्रारम्भ में परमात्मा के ब्रह्माण्ड में कुछ नहीं था तब परमात्मा ने ब्रह्माण्ड में कुछ संरचना के बारे में सोचा और प्रकृति के सहयोग से ***परमात्मिक ऊर्जा*** *का ब्रह्मखण्ड में प्रादुर्भाव किया यह ऊर्जा सभी ऊर्जा का स्त्रोत है इस ऊर्जा के लिये परमात्मा नें ॐ (ओम्) को उच्चरित किया जिसमे परम परमात्मिक तत्व यानि* ***पंन्चतत्व*** *(आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) का सृजन हुआ।*

परमात्मा ने ब्रह्म खण्ड के सृजित ***त्रिदेव*** *(ब्रह्मा, विष्णु, महेश) और* ***त्रिदेवियाँ*** *(सरस्वती, लक्ष्मी व दुर्गा) को देव खण्ड में स्थापित किया और देव खण्ड में सहायता हेतु इन्द्र, वृहस्पति एवं गरूड को विभिन्न रूप में विभिन्न कार्यो के लिये नियत किया।*

ब्रह्माण्ड खण्ड का संचालन परमात्मिक कृपा से होता है उसके संचालन हेतु ब्रह्माण्ड में राशि, चक्र, तारे, नक्षत्र, स्वतंत्र रूप या समन्वित रूप में ब्रह्माणिक गति को संचलित करते है।

ज्ञान सर्वोपरि है जो ज्ञान खण्ड की पूँजी है यह ऊपर ब्रह्माड खण्ड के तारतम्य में और निचे भौतिक खण्ड तारतम्य में है ज्ञान खण्ड में ज्ञानवर्धन के लिए परमात्मिक कृपा से वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुती इत्यादि वेदिक सहायक ग्रन्थ है जो पहले अप्रत्यक्ष थे और बाद में भौतिक रूप में प्रतिपादित किये गये।

भौतिक खण्ड भौतिक संसार है जहाँ पर सभी चराचर दो प्रकृति से युक्त है जिसे क्रमशः ***मूल प्रकृति*** *एवं* ***उच्च प्रकृति*** *कहते हैं। मूल प्रकृति पंचतत्व–****आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी*** *के साथ* ***इन्द्री, बुद्धी,*** *और* ***अंहकार*** *से युक्त है। इसके ऊपर* ***उच्च प्रकृति*** *है जो परमात्मा का अंश है और* ***आत्मा*** *के रूप में है।*

ओम् की ओमिक कृपा से मुझे सम्पूर्ण कथा तैयार करने का अवसर मिला जो आत्मा को परमात्मा से मिलन के लिए कथा के रूप में वर्णित है। यह कथा आत्मा से परमात्मा को विभिन्न खण्डों के माध्यम से जुटने में सहायक है। कथा को विभिन्न खण्डों (ब्रह्म, देव, ब्रह्माण्ड, ज्ञान, एवं भौतिक, खण्ड) में वर्णित किया गया है। कथा के पश्चात ओम् चालीसा ओम् आरती, ओम् ब्रह्म मंत्र एवं ओमिक शान्ति प्रार्थना प्रतिपादित है जो क्रमशः दैविक, दैहिक एवं भौतिक ताप के साथ समस्या के निवारण में एक सूत्र के रूप में सहायक है।

ऊँ ओम् तत् सत ऊँ

(डा0 नागेन्द्र प्रसाद दूबे)
संस्थापक
ओम् फाउण्डेशन,
न्यूयार्क, यू. एस. ए.

विषय सूची

वर्ग	विषय	पृ. सं.
•	*प्रस्तावना*	i-ii
1.	*ओमिक पूजा विधान*	01-04
2.	*ओम् ब्रह्म खण्ड*	05-07
3.	*ओम् देव खण्ड*	08-10
4.	*ओम् ब्रह्माण्ड खण्ड*	11-13
5.	*ओम् ग्यान खण्ड*	14-16
6.	*ओम् भौतिक खण्ड*	17-20
7.	*ओम् चालीसा*	21-24
8.	*ओम् आरती*	25-27
9.	*ओम् ब्रह्म मंत्राय*	28-37
10.	*ओमिक शान्ति प्रार्थना*	38-38
11.	*कुछ ओमिक प्रस्तावित रास्ते*	39-42

प्रथम वर्ग

"ओमिक पूजा विधान"

ऊँ	परमात्मने	नमः	ऊँ	(तीन बार उच्चार करें)
ऊँ	प्रकृत्यै	नमः	ऊँ	(तीन बार उच्चार करें)
ऊँ		नमः	ऊँ	(तीन बार उच्चार करें)
ऊँ	ओमेश्वराय	नमः	ऊँ	(तीन बार उच्चार करें)
ऊँ	ओम, तत्,	सत्	ऊँ	(तीन बार उच्चार करें)

ओम भद्रं कर्णेभिः ऋणुयाम देवाः
भद्रं पष्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवॉ संस्तनूभिः
व्यशेम देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूशाः विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिश्टनेमिः
स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।

यं ब्रह्मा वरूणेन्द्र रूद्र मरूतः स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः साग्ङः पदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।।

ध्यानावस्थित तग्दतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।
या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणा वरदण्ड मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि र्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसहशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि ।।
ओम सर्वमंगल मांगल्ये
शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये न्यम्बके गौरी,
नारायणी नमोस्तु ते ।।8।।

ऊँ ओमेस्वराय सर्व देवाय सर्वचराचरस्य पतये नमः ऊँ (तीन बार उच्चार करें)
ऊँ शान्ति, शान्ति, शान्ति ऊँ

द्वितीय वर्ग

ओम् ब्रह्म खण्ड

तू ही ओम् प्रतीक मे, सम्पूर्ण अवतार ।
अणु अणु मे सव ब्रह्म है, पूर्ण ब्रह्म संसार ।।

स्व प्रकाश मे स्थिति होकर, सम्पूर्ण निर्धार किया,
सम्पूर्ण निर्धारित करके, खण्ड खण्ड विस्तार किया ।
सभी खण्ड को स्वेच्छा से ही, अपना ही उपहार दिया,
एक सूत्र होने के नाते, अपना ही आधार दिया ।।1 ।।
ओम्, तत्, सत् है नाम तुम्हारा, पूर्ण ब्रह्म के स्वामी,
इसी नाम से आदिकाल में, ब्राह्मण, वेद औ यज्ञ रचानी ।
ओम् ब्रह्म तप, यज्ञ, दान का, सबका पालन हार,

कर्म समर्पित तत् ब्रह्म है, सत् का सत्य संसार ।।2।।
तूँ है निराकार परमेश्वर, नही है कोई रूप,
जिस रूप में जो भी माने, वही है तेरा रूप ।
ओम् चराचर का है स्वामी, सदा धरे सव रूप,
सवके अन्तःकरण में व्यापित, तू ही हो सतरूप ।।3।।
तू है परम पिता परमेश्वर, परम प्रकृति के स्वामी,
तेरे अन्तःकरण ध्यान से, सर्व श्रृष्टि है आनी ।
ओम् तुम्हारी वाणी ने ही, पंचतत्व निर्धार किया,
जिसके भिन्न समन्वय ने ही, सम्पूर्ण विस्तार किया ।।4।।
परमात्मा ने श्रृष्टि सृजन में, ओम् शब्द उच्चार किया,
ओम् शब्द ने परमरूप मे, पंचतत्व निर्धार किया ।
पंचतत्व मे क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर समाहित,
जिसके अपने दैव गुणों से, जन धन है विस्तारित ।।5।।
क्षिति शरीर है जल वाहक है, अग्नि तत्व है साधक,

वायु वेग है शक्ति रूप मे, प्राण वायु संचालक ।
जब तक इनका रहे समन्वय, सदा रहे सुख दायक,
नागेन्द्र इनका अनियंत्रण, सदा होय दुख दायक ।।6।।

जय जय कृपा निधान, सम्पूर्ण आधार ।
कण कण के संसार तुम, करते सवको पार ।।

ॐ ब्रह्म खण्डाय नमः ॐ

तृतीय वर्ग

ओम् देव खण्ड

ब्रह्म खण्ड से अवतरित, देव खण्ड मे वास।
देव खण्ड मे सर्वहित, करत रहत अभ्यास।।

ब्रह्म लोक को सर्वोपरि करके, देव लोक विस्तार किया,
सभी देवताओं को तू ने, उचित उचित आधार दिया ।
उनके संग उनके साथी को, प्रेम सहित निर्धार किया,
जिसकी रही भावना जैसी, वैसा ही संसार दिया ।।1 ।।
तू ने अपनी श्रृष्टि सृजन मे, तीन रूप दर्शाये,
ब्रह्म रूप में ब्रह्मा बन कर, सकल श्रृष्टि निर्माये ।
विष्णु रूप में पालक बन कर, सकल श्रृष्टि विस्तार किये,

रूद्र रूप मे साधक वन कर, अप्रिय का संहार किये ।।2।।
मा सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, सव हैं तेरे जाये,
सरस्वती वन ज्ञान दान दे, सव सम्मान वढ़ाये ।
लक्ष्मी रूप मे मान वढा कर, लक्ष्य सिद्ध करवाये,
दुर्ग रूप में माता वन कर, सव कल्याण कराये ।।3।।
इन्द्र, वृहस्पति, गरूड रूप मे, सकल सृष्टि कल्याण करे,
इन्द्र रूप में वारि सृजन कर, सृष्टि मे जलधार भरे ।
ज्ञान वृहस्पति पूर्ण करे, सव मानव का सम्मान करे,
गरूड रूप मे संहारक हो, सर्व विषम संहार करे ।।4।।
तेरे तेज पुंज से सिंचित, इन्द्री मन औ बुद्धि,
सव पर तेरी दृष्टि निरन्तर, करे कार्य औ सिद्धि ।
कर्ण कर्म औ दृष्टि से स्वामी, सदा उच्च व्यवहार,
अच्छा सुने, करे औ देखे, ताकि वेडा पार ।।5।।

अन्त समय मे तूँ ही आत्मन, इन्द्री मन स्वीकार करे,
आत्मा को तदरूप वनाकर, पुनर्जन्म संचार करे ।
सर्व जगत मे दैहिक, दैविक, भौतिक ताप संचार करे,
कह नागेन्द्र तू ज्ञान वढाकर, सभी ताप उपचार करे ।।6।।

देव लोक विस्तार कर, दिये सभी को मान ।
जिंसकी जैसी कल्पना, वैसे उसका काम ।।

ॐ देव खण्डाय नमः ॐ

चतुर्थ वर्ग

ओम् ब्रह्माण्ड खण्ड

देवलोक से उतरिकर, व्रह्माण्ड निर्माय ।
सर्व समन्वय करन हेतु, दिये पिण्ड जन्माय ।।

त्रैलोक को क्रम मे वाँधा, स्वर्ग लोक को उपर राखा,
राशि, तारे, व्रह्माण्ड मे राखा, नक्षत्रों से सवको साधा ।
सभी चराचर निचे राखा, सवका समन्वय प्रेम से साधा,
मृत पाताल लोक को वाँधा, उनका समन्वय सीधे साधा ।।1 ।।
राशि चक्र को सूत्र बाँधकर, अलग, अलग विस्तार किया,
सूर्य, चन्द्र औ अन्य ग्रहों की, सीमा को निर्धार किया ।
राशि राशि का करके समन्वय, चक्रों को निर्धार किया,

सभी राशि के ताल मेल को, अण्ट अंश का व्दार दिया ।।2।।
सभी मनुष्यों की सेवा मे, व्दादस राशि वनाये,
हर व्यक्ति की राशि नियत कर, ग्रह नक्षत्र वैठाये ।
राशिनुसार स्वभाव नियत कर, मानव रूप दिखाये,
जिसकी जैसी राशि नियत हो, जीवन वैसा पाये ।।3।।
आपस में सव मिलकर तारे, तारे पुंज वनाये,
स्व उष्मा व स्व प्रकाश दे, अन्य पिंण्ड दमकाये ।
दूरस्थ व्रह्माण्ड मे स्थिति, अपनी ज्योति दिखाये,
जिसकी जैसी ज्ञान दृष्टि हो, वैसे दर्शन पाये ।।4।।
शत सहत्र तारे व्रह्माण्ड के, अगणित गण दर्शायें,
अपने तेज पुंज से तारे, ग्रह राशि चमकायें,
सप्तरिषि महान तारा है, अपना दर्श कराये ।
तेरी कृपा दृष्टि से स्वामी, और भी तारे दर्शाये ।।5।।

तेरी कृपा मात्र से स्वामी, सभी नवग्रह जाये,
सूर्य देव का वन्दन कर ही, उसका चक्र लगाये ।
तेज उष्म से हीन नवग्रह, सूर्य से उर्जा पायें,
कह नागेन्द्र सौर्य ऊर्जा से, नवग्रह रूप दिखायें ।।6।।

ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड के तारे, तेरे ही सव जाये ।
इनका आपस का ही समन्वय, जीवन पथ दर्शाये ।।

ॐ ब्रह्माण्ड खण्डाय नमः ॐ

पंचम वर्ग

ओम् ग्यान खण्ड

ग्यान लोक मे आगमन, वने ज्ञान के धाम ।
जिसकी जैसी कर्म गती हो, वैसे उसका काम ।।

अथर, यजुर, रिग, साम वेद से, सवका ज्ञान वढावन,
अथर वेद से मान वढाकर, मानसिक कष्ट नसावन ।
यजुर वेद से यज्ञ करे, हो सवका जीवन पावन,
रिग वेद से मंत्र जपाकर, साम वेद कवि गायन ।।1 ।।
व्रह्म एक है रूप अनेको, सवको वोध कराये,
ओम् एक है इसी जगत में, अलग अलग कहलाये ।

ओम् हिन्दू है, हूम तिब्बतियन, मुस्लि अमिन कहलाये,
अमेन क्रिश्चियन, ग्रीक व रोमन, अहूम जोराष्ट्र वताये ।।2।।
तीन गुन के दाता हो तुम, सवमें व्यापक रहते हो,
सत गुण से तू सत्य करे, औ रजस राज सिखलाते हो ।
तमस गुण अज्ञान वढाकर, नाना दुर्गति करते हो,
तू मानव को समय समय पर, सव गुण वोध कराते हो ।।3।।
वैश्वानर से वैभव देकर, सर्व मान्य विस्तार करे,
तैजस से तू तेज बढाकर, कुल का ज्ञान प्रगाढ करे ।
प्रज्ञान से लक्ष्य नियत कर, व्रह्म ज्ञान पर ध्यान करे,
आत्मन्, व्रह्मन् लीन कराकर, परम गती प्रदान करे ।।4।।
वैश्वानर जाग्रत स्थिति है, वाह्याम्वर मे लीन करे,
तैजस स्वप्न अवस्था है, जो अर्न्तध्यान विलिन करे ।
प्रज्ञान सुसुप्ती वन कर, निज आत्मन का ध्यान करे,

आत्मन् तुरिया स्थिति में तूँ, सदा चित्त आनन्द भरे ।।5।।
क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर हैं, जड़ प्रकृति के दाता,
मन वुद्धि औ अहंकार सव, इनके संध वधाता ।
स्व स्वरूप मे चेतन वनकर, उच्च प्रकृति दर्शाता,
आत्म रूप में आत्मा वन कर, जड़ प्रकृति चमकाता ।।6।।
आत्म रूप में आत्मन तू ही, जीवन का संचार करे,
सर्व जगत को जीवन देकर, सृष्टि का विस्तार करे ।
तैजस प्रेरित नागेन्दर तू, सेवा भाव प्रचार करे,
मानव माधव सेवा लक्षित, मानवता स्वीकार करे ।।7।।

तू ही ओम् प्रतीक मे, मान ग्यान भण्डार ।
मानव ग्यान विस्तार कर, आत्म करै साकार ।।

ऊँ ग्यान खण्डाय नमः ऊँ

षष्ठम वर्ग

ओम् भौतिक खण्ड

ओमाकृत मे रचित है, सभी चराचर जात ।
पंचतत्व से जनित है, सव भौतिक की गात ।।

जन्म आयु के दाता हो तुम, कण कण मे रहते हो,
सवमे जीवन शक्ति दानकर, सवको गति देते हो।
चर औ अचर रूप मे तूँ ही, सकल भुवन भ्रमते हो,
मानव की मानवता वन कर, जन जन प्रेरित करते हो ।।1 ।।
पूरक वन ब्रह्माण्ड से तू ही, प्राण वायु भरते हो,
जिसकी जीवन शक्ति जैसी, उतनी स्वासें देते हो ।

रेचक से सव कष्ट हरण कर, जीवन शक्ति वधाते हो,
धर्म कर्म, संस्कार से निर्मित, जीवन ज्योति जलाते हो ।।2।।
चर औ अचर सभी खण्ड के, तेरे ही हैं जाये,
अपने अंश से उन्हे वाँधकर, खण्ड खण्ड उपजाये ।
पंचतत्व के दाता हो तुम, सर्व जगत के ताता,
उसी तत्व के तत्वान्तर से ही, सभी जीव निर्माता ।।3।।
पंचतत्व की निर्मित काया, सर्व लोक में तुम्ही वनाया,
दोष, धातु सव तुम्ही वनाये, यथा स्थान उन्हें वैठाये ।
सवका समन्वय तूँ ने वनाया, जीवन पथ सवको दर्शाया,
दोष धातु का करके समन्वय, पूर्ण स्वास्थ्य की राह वताया ।।4।।
सभी चराचर परम कृपा से, निज प्रकृति को जाये,
जिसका जैसा पूर्व कर्म है, वैसा जीवन पाये ।
पूर्व जन्म के धर्म कर्म से, वर्तमान जीवन पाये,

ओमिक शुद्धि होय जव इनकी, तभी इन्हे अपनाये ।।5।।
प्राण, ज्ञान, मन जीवन तूँ है, विश्व रूप में स्वामी,
जीवन का आधार तुम्ही हो, सकल मनोरथ कामी ।
आत्मा के संग इन्द्री मन को, अग्र जन्म ले जाते हो,
कर्म नियति के ताल मेल से, नियत कर्म करवाते हो ।।6।।
जन्म जन्म तूँ साथ ओम् है, पूर्ण व्रह्म के दाता,
मानव डूवा अन्धकार मे, समझ नहीं कुछ आता ।
अज्ञान अन्धकार रूप से, इन्द्री, मन, वुद्धि वाँधे,
अज्ञान का नाश करे तूँ, तभी तुम्हें पहचाने ।।7।।
ओमिक ध्यान धरे जव कोई, तेरे शरण में आवै,
माया मोह हटावै तू हीं, तभी उसे अपनावै ।
धन, ग्यान औ सुख प्रदान कर, उसके ताप हटावै,
जीवन का उद्धार करे औ, सदा सदा अपनावै ।।8।।

जो मन वचन कर्म से स्वामी, तेरे शरण में आवै,
सुख, समृद्धि, आयु, बल, पावै, परम रूप हो जावै ।
ओम् कथा की भाव धारणा, जो कोई मन से ध्यावै,
नागेन्द्र तव कृपा हो ब्रह्मन, तभी उसे अपनावै ।।9।।

तेरी ओमिक प्रीत से, सदा होय कल्यान ।
***इन्द्री,** मन, वुद्धि सभी, रहे शरण में आन ।।*

ऊँ भौतिक खण्डाय नमः ऊँ

सप्तम वर्ग

ओम् चालीसा

जय जय कृपा निधान, सकल भुवन आधार,
कण कण के संसार तुम, हरते सबका भार ।।

तू है कृपा सिन्धु सा रूपा, ओम् तुम्हारी बानी,
तू है स्वामी सकल भुवन का, ब्रह्माण्ड रजधानी ।।1 ।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप मे कर्ता, भर्ता, संहर्ता,
सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा तू, सर्व भुवन का हित कर्ता ।।2 ।।
वैश्वानर, तैजस्य रूप मे, निधि, बुधि के तू दानी,
प्रज्ञान से उपर तू है, आत्मन् ब्रह्मन् स्वामी ।।3 ।।

जाग्रत, स्वप्न, सुसुप्ता मे तू, भक्ति भाव भरते हो,
ऊॅच, नीच, तू मध्य में स्वामी, रक्षा सबकी करते हो ।।4।।
कर्ण, कर्म तू दृश्य से स्वामी, सदा सजग रखते हो,
मानव माधव सेवा में तू, जन जन प्रेरित करते हो ।।5।।
इन्द्र, वृहस्पति, गरूड रूप में, सकल सृष्टि के दाता,
सकल वनस्पति जीव जगत के, तू ही प्राण प्रदाता ।।6।।
अथर, यजुर, रिग, साम वेद में, तुम्ही विश्व विख्याता,
वेद, वेदांग, उपनिषद श्रुति तू, ब्रह्मसूत्र के दाता ।।7।।
माण्डूक्य उपनिषद प्रकट तू, ओम् रूप में ताता,
सकल विश्व में रखता है तू, सभी धर्म से नाता ।।8।।
भू, आकाश, पाताल तुम्ही हो, तीन लोक आगामी,
राशिचक्र, तारे, नक्षत्र तू, कण कण के अनुगामी ।।9।।
विनु तेरे कुछ होय न सम्भव, अणु अणु के विज्ञानी,

जो कुछ दृश्य मात्र सम्भव है, सबमे हो तुम स्वामी ।।10।।
आदि, अन्त तू मध्य हो भगवन, त्रिभुवन के वरदानी,
दैहिक, दैविक, भौतिक तू है, सकल ताप की खानी ।।11।।
भूत भविष्य सब तुम्ही हो स्वामी, पूर्ण कर्म के ज्ञानी,
संस्कार के रूप में तुम ही, वर्तमान फल आनी ।।12।।
जन्म आयु के दाता हो तुम, कण–कण में रहते हो,
चर औ अचर रूप में तुमही, सकल भुवन भ्रमते हो ।।13।।
पूरक वन ब्रह्माण्ड से तुम ही, प्राण वायु भरते हो,
रेचक से सब कष्ट हरण कर, सर्व शान्ति देते हो ।।14।।
पंचतत्व के रूप में तुमहीं, त्रिभुवन में रहते हो,
दोष, धातु में करे समन्वय, पूर्ण स्वास्थ्य देते हो ।।15।।
सत्व रूप में आदि अन्त तक, तुम्ही व्याप्त रहते हो,
रजस रूप में राजकरे तू, तमस कष्ट सहते हो ।।16।।

प्राण, ज्ञान, मन, जीवन तू है, विश्व रूप में स्वामी,
जीवन का आधार तुम्ही हो, सकल मनोरथ कामी ।।17।।
जन्म जन्म तू साथ ओम् है, नर मति का अज्ञानी,
ओम् ना समझी यह मति तुमको, कैसी है अभिमानी ।।18।।
जो मन वचन कर्म से तेरे, ओम् शरण को आवे,
सुख समृद्धि, आयु, बल पावे, ओम् मयी हो जावे ।।19।।
धारणा, ध्यान, समाधि ओम् से, परमगति को जावे,
नागेन्द्र तव कृपा से साई, शरण ओम् की पावे ।।20।।

तू ही ओम् प्रतीक वन, सकल ब्रह्म के ईश ।
चर औ अचर स्वरूप में, विद्यमान जगदीश ।।"

ऊॅ ओम् चालीसाय नमः ऊॅ

अष्टम वर्ग

ओम् आरती

ओम् जय जय ओम् हरे, स्वामी जय जय ओम् हरे;
पूर्ण ब्रह्म के स्वामी, सबके कष्ट हरे ।
(ओम् जय जय ओम् हरे)

तू है कृपा सिन्धु सा रूपा, ओम् तुम्हारी शक्ति;
सर्व जगत का रक्षक है तू, प्रबल करे सब भक्ति ।
(ओम् जय जय ओम् हरे)

ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप में, तू सबका आधार;

सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा तू, सबका सूत्राधार ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

इन्द्र, वृहस्पति, गरूड रूप मे, सृष्टी का आधार;
सकल वनस्पति जीव जगत के, तू ही पालन हार ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

राशिचक्र तारे, नक्षत्र सब सेवा मे तैयार;
करे समन्वय तीन लोक मे, लेकर तब आधार ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

वेद, वेदांग, उपनिषद रूप में, करे ज्ञान विस्तार;
सर्व धर्म को आश्रय देकर, करता बेड़ा पार ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

विषय वयार भगाकर स्वामी, करे आत्म उद्धार;
नर से नारायण का संगम, करे आत्म साकार ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

ओम् नागेन्द्र शरण तव आवे, नित्य करे जयकार;
सुख, समृद्धि, आयु, बल पावे, ओम् मयी हो जाय ।

(ओम् जय जय ओम् हरे)

ॐ आरती ॐ

नवम वर्ग

ॐ ब्रह्म मंत्राय ॐ

1.	ॐ	अणुज्ञाय नमः	ॐ
2.	ॐ	अथर्व वेदाय नमः	ॐ
3.	ॐ	अरण्यकाय नमः	ॐ
4.	ॐ	आयुप्रदायकाय नमः	ॐ
5.	ॐ	आदिस्वरूपाय नमः	ॐ
6.	ॐ	आत्मने नमः	ॐ
7.	ॐ	ओम्काराय नमः	ॐ
8.	ॐ	अन्तायै नमः	ॐ

9.	ॐ	इन्द्राय नमः	ॐ
10.	ॐ	ईशाय नमः	ॐ
11.	ॐ	उपनिषदाय नमः	ॐ
12.	ॐ	कण कण वासिने नमः	ॐ
13.	ॐ	कृपा निधये नमः	ॐ
14.	ॐ	कृपा सिन्धु स्वरूपाय नमः	ॐ
15.	ॐ	गरूड़ाय नमः	ॐ
16.	ॐ	चराचराये नमः	ॐ
17.	ॐ	जन्मदायिने नमः	ॐ
18.	ॐ	जगदीशाय नमः	ॐ
19.	ॐ	तमनाशिने नमः	ॐ
20.	ॐ	तारा गणपतये नमः	ॐ

21.	ॐ	तैजस्वरूपिणे नमः	ॐ
22.	ॐ	दुर्गा रूपिणे नमः	ॐ
23.	ॐ	नव ग्रहाय नमः	ॐ
24.	ॐ	नाद ब्रह्म जगन्नाथाय नमः	ॐ
25.	ॐ	नागेन्द्राय नमः	ॐ
26.	ॐ	पंचतत्वदायिने नमः	ॐ
27.	ॐ	परम्गति प्रदायकाय नमः	ॐ
28.	ॐ	पूर्णाय नमः	ॐ
29.	ॐ	पूर्णरूपिणे नमः	ॐ
30.	ॐ	पूर्णयोगाय नमः	ॐ
31.	ॐ	पूर्ण स्वास्थ्यदायिने नमः	ॐ
32.	ॐ	पूर्ण ब्रह्मवे नमः	ॐ

33.	ॐ	प्रजापतये नमः	ॐ
34.	ॐ	पूरकाय नमः	ॐ
35.	ॐ	प्रणवस्वरूपाय नमः	ॐ
36.	ॐ	प्रतिमूर्तये नमः	ॐ
37	ॐ	प्राणकोषनिधये नमः	ॐ
38.	ॐ	प्राणदायिने नमः	ॐ
39.	ॐ	प्राणाय नमः	ॐ
40	ॐ	प्रज्ञानरूपिणे नमः	ॐ
41.	ॐ	ब्रह्मसूत्राय नमः	ॐ
42.	ॐ	ब्रह्मेशाय नमः	ॐ
43.	ॐ	ब्रह्मणे नमः	ॐ
44.	ॐ	ब्रह्माण्डरूपिने नमः	ॐ

45.	ॐ	ब्रह्मण्डनायकाय नमः	ॐ
46.	ॐ	भगवते वासुदेवाय नमः	ॐ
47.	ॐ	भूपतये नमः	ॐ
48.	ॐ	भगवते नमः	ॐ
49.	ॐ	माण्डूक्यमूर्तये नमः	ॐ
50.	ॐ	मध्याय नमः	ॐ
51.	ॐ	महेश्वररूपाय नमः	ॐ
52.	ॐ	माधवाय नमः	ॐ
53.	ॐ	मनेन्द्रिय निधये नमः	ॐ
54.	ॐ	यजुर वेदाय नमः	ॐ
55.	ॐ	रिग वेदाय नमः	ॐ
56.	ॐ	राशिचक्रस्वरूपाय नमः	ॐ

57. ॐ राजराजेश्वराय नमः ॐ
58. ॐ रेचकाय नमः ॐ
59. ॐ विष्णुरूपाय नमः ॐ
60. ॐ विध्ननाशकाय नमः ॐ
61. ॐ विश्वविख्याताय नमः ॐ
62. ॐ वृहस्पतये नमः ॐ
63. ॐ वेदाय नमः ॐ
64. ॐ वेदांगाय नमः ॐ
65. ॐ बुद्धिप्रदायकाय नमः ॐ
66. ॐ श्री सत्य साईनाथाय नमः ॐ
67. ॐ सिद्धिप्रदायकाय नमः ॐ
68. ॐ संपूर्ण सुखाय नमः ॐ

69.	ॐ	संपूर्ण दुःखशमनाय नमः	ॐ
70.	ॐ	संपूर्ण प्रकृत्यै नमः	ॐ
71.	ॐ	संस्काराय नमः	ॐ
72.	ॐ	सकल धातवे नमः	ॐ
73.	ॐ	सकल निधये नमः	ॐ
74.	ॐ	सकल भुवनेश्वराय नमः	ॐ
75.	ॐ	सकल देवाय नमः	ॐ
76.	ॐ	सकल वनस्पतये नमः	ॐ
77.	ॐ	सरस्वती रूपिणे नमः	ॐ
78.	ॐ	सकल तापहराय नमः	ॐ
79.	ॐ	सकल जीवनदायिने नमः	ॐ
80.	ॐ	सहंर्ताय नमः	ॐ

81. ॐ सकल मनोरथप्रदायकाय नमः ॐ
82. ॐ सर्व धर्मस्वरूपिणे नमः ॐ
83. ॐ सर्व धर्म सम्मानिताय नमः ॐ
84. ॐ सर्व धारिणे नमः ॐ
85. ॐ सर्व कर्तायै नमः ॐ
86. ॐ सर्व मार्ग दर्शकाय नमः ॐ
87. ॐ सर्व भद्र कर्णाय नमः ॐ
88. ॐ सर्व भद्र श्रुतये नमः ॐ
89. ॐ सर्व भद्र दृश्याय नमः ॐ
90. ॐ सर्व भतृणे नमः ॐ
91. ॐ सर्व शक्तये नमः ॐ
92. ॐ सर्व देवस्वरूपाय नमः ॐ

93.	ॐ	सर्व आत्मने नमः	ॐ
94.	ॐ	सर्व कर्तृरूपाय नमः	ॐ
95.	ॐ	सर्वत्रस्थिताय नमः	ॐ
96.	ॐ	समन्वयकाय नमः	ॐ
97.	ॐ	सत्व रूपाय नमः	ॐ
98.	ॐ	सपूर्ण दर्शकाय नमः	ॐ
99.	ॐ	सम्पूर्ण श्रुतये नमः	ॐ
100.	ॐ	स्वामिने नमः	ॐ
101.	ॐ	शरणागत त्रणाये नमः	ॐ
102.	ॐ	हिरण्यगर्भाय नमः	ॐ
103.	ॐ	त्रिकालाय नमः	ॐ
104.	ॐ	त्रिभुवनदात्रे नमः	ॐ

105. ॐ त्रिलोकनाथाय नमः ॐ
106. ॐ ज्ञानप्रदायकाय नमः ॐ
107. ॐ ज्ञानगमनाय नमः ॐ
108. ॐ ज्ञानेन्द्रियाय नमः ॐ
109. ॐ ज्ञानगंगयै नमः ॐ
110. ॐ ज्ञान शंकराय नमः ॐ
111. ॐ ओम्कारााय नमः ॐ

ॐ ब्रह्म मंत्राय ॐ

दशम वर्ग

"ओमिक शान्ति प्रार्थना"

परमम् पवित्रम इति ओम् तत्वम्
परमम् विचित्रम इति ओम् पंचतत्वम् ।
चराचरस्य मोक्षः प्रदानम्
इति पंचतत्वम् शिरसे नमामि ।।

ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति ॐ

एकादश खण्ड

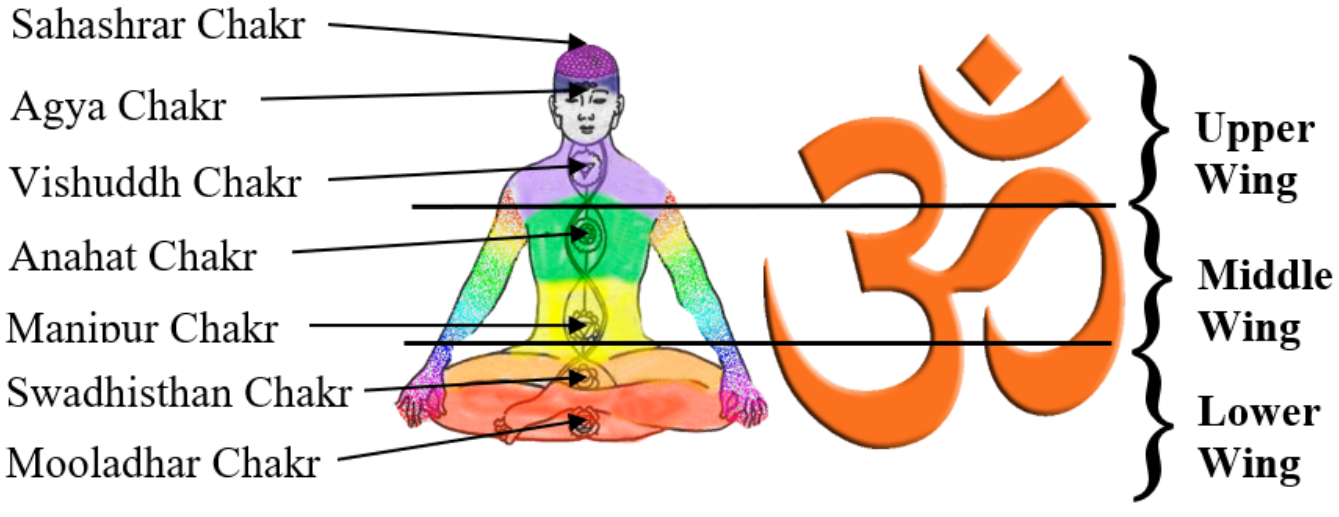

"CHAKRAL BODY AND AUM"

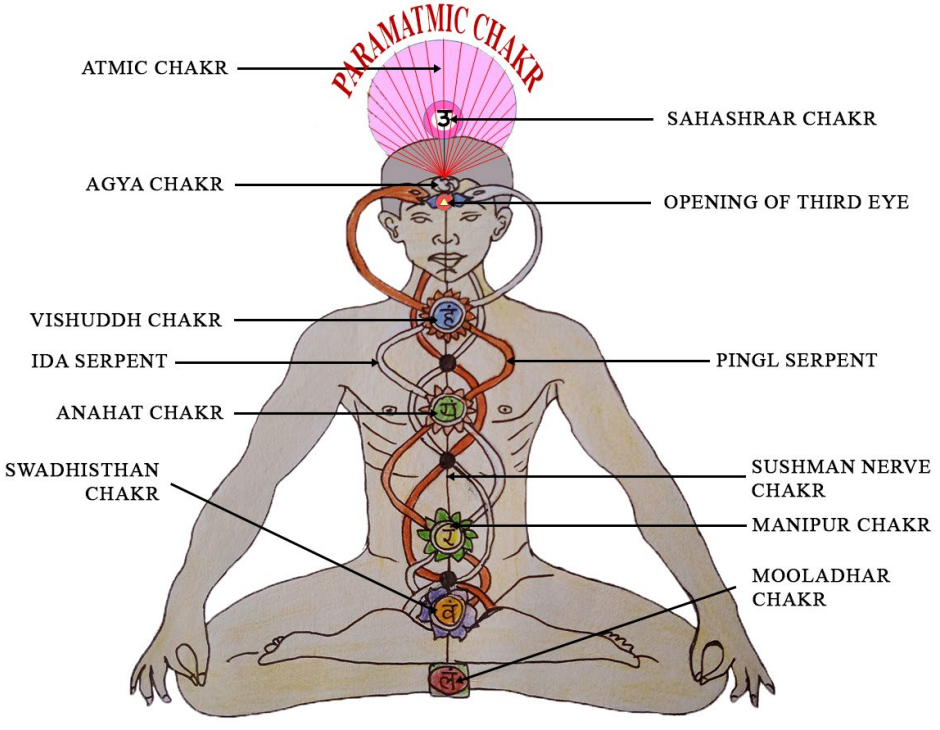

"LOCATION OF CHAKRAS"

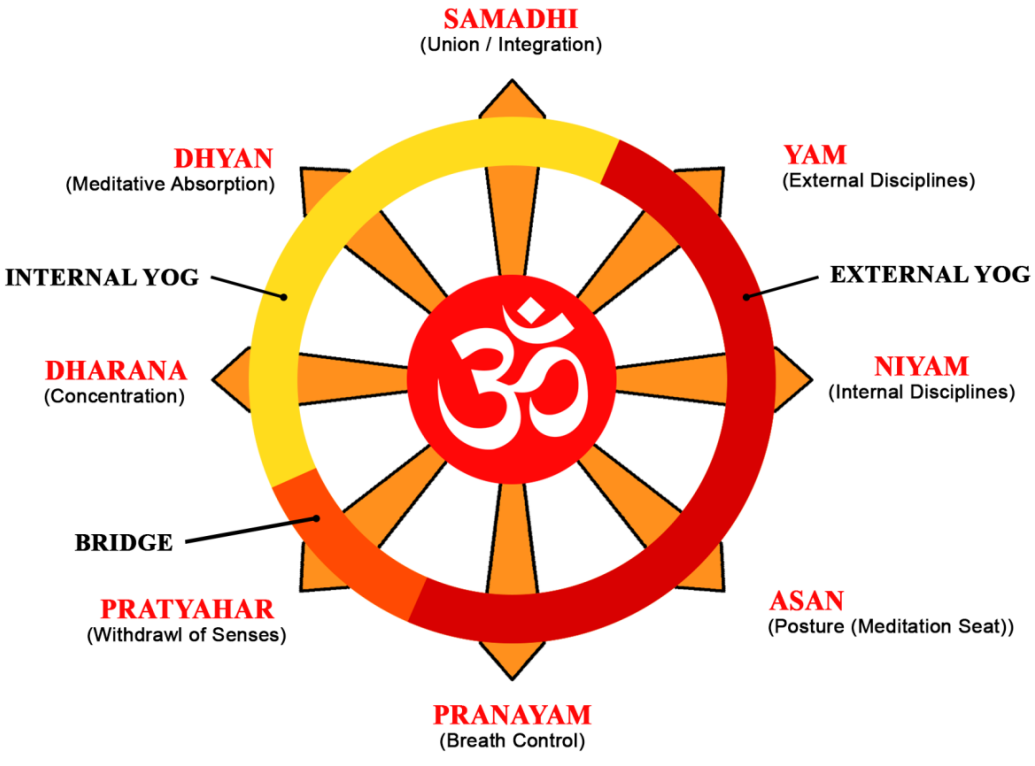

AUMASTAK YOG ⟶ MEDIATION

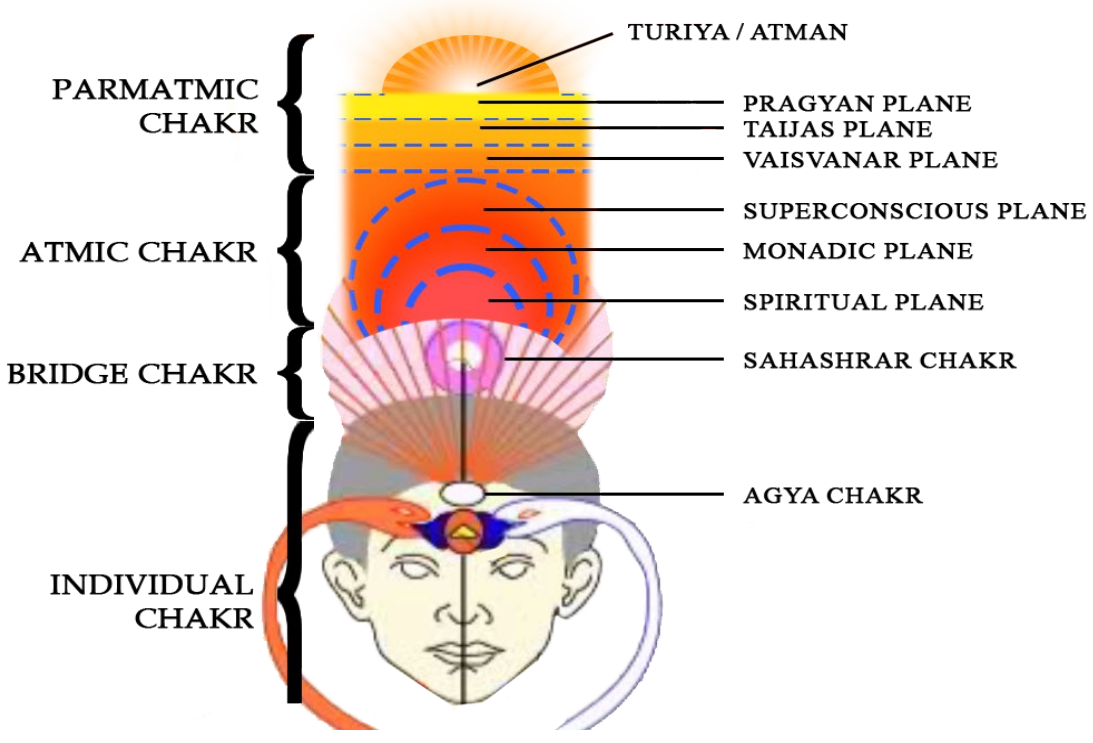

"DIAGRAMATIC STATE OF DIVINE CHAKRAS"